सर्वधर्म सम्मेलन

(23 अप्रैल 2012) — लाल कुर्सी ग्राम, कानपुर

कार्यक्रम

प्रातः 9:00–9:30	नामांकन
प्रातः 9:30–10:00	स्वागत – संतोष भदौरिया जी
	कार्यक्रम विवरण व संचालन – श्रीराम नरसिम्हन जी
	भूमिका, सम्मेलन का प्रयोजन, स्वरूप – गणेश बागड़िया जी
प्रातः 10:00–11:00	मानव धर्म का प्रतिपादन–मानव धर्म एक, मानव जाति एक – ए नागराज जी
प्रातः 11:00–11:40	प्रस्तुति – सामदोंग रिनपोछे जी
प्रातः 11:40–12:00	चाय अंतराल
प्रातः 12:00–12:20	प्रस्तुति – साधन भट्टाचार्य जी
दोपहर 12:20–12:40	प्रस्तुति – रामजी भाई जी
दोपहर 12:40–1:00	प्रस्तुति – संकेत ठाकुर जी
दोपहर 1:00–3:00	भोजन एवं विश्राम
सायं 3:00–3:30	प्रस्तुति – सोमदेव त्यागी जी
सायं 3:30–3:45	प्रस्तुति – इस्माइल टाक जी
सायं 3:45–4:00	प्रस्तुति – सुरेन्द्र पाठक जी/सुनीता पाठक जी
सायं 4:00–4:15	प्रस्तुति – राकेश गुप्ता जी
सायं 4:15–4:30	चाय अंतराल
सायं 4:30–5:30	प्रस्तुति – कर्मवीर सिंह जी, पूर्व डी जी पी
	प्रस्तुति – राशिद हुसैन नादरी जी
	अन्य प्रस्तावों के लिए आमंत्रण, प्रश्न–उत्तर
सायं 5:30–6:00	सम्मेलन सारांश, निष्कर्ष, आगे की कड़ियाँ – गणेश बागड़िया जी
सायं 6:00–6:10	धन्यवाद ज्ञापन – विवेक चतुर्वेदी जी

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सर्व धर्म सम्मेलन

जिसमे "सार्वभौम मानव धर्म" का प्रतिपादन किया जायेगा

"मानव जाति एक, मानव धर्म एक" – मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद की रोशनी में

- प्रणेता एवं लेखक – ए नागराज, अमरकंटक

स्थली: मानव मंदिर, ग्राम करौली, कानपूर
दिनांक: सोमवार, २३ अप्रैल २०१२

अधिक जानकारी:
मध्यस्थ दर्शन मुख्य वेब साईट: [अंग्रेज़ी में] www.madhyasth-darshan.info

सम्मेलन वेब साईट: www.madhyasth.info
English Site: www.mdarshan.info

उद्देश्य:

"सार्वभौम मानव धर्म" के अनुसंधान के फलस्वरूप लोकव्यापीकरण हेतु, जिससे अखण्ड मानव समाज, सार्वभौम व्यवस्था स्थापित हो सके | इसका आधार मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद है|

अवधारणा: *(* श्री ए नागराज जी के लेख के लिए सम्मेलन वेब साईट देखें)*

सर्व मानव ने शुभ चाहा है, शांति एवं सामंजस्य चाहा है | इस दिशा में आज तक कई प्रयास हुए हैं, परन्तु संतोष जनक परिणाम नहीं निकला | इन प्रयासों में विभिन्नताएं भी दिखती हैं| आदि काल से, हम मानवों का विकास हमारे स्वयं के बारे में समझ एवं अस्तित्व (वास्तविकता) के समझ पर निर्भर किया है| पत्थर कैसा है, जानवर कैसा हैं, इन सब में तो हम अधिकाँश मुद्दों पर एक-मत हो पाएं हैं, परन्तु मानव क्या है, क्यों है, कैसा है, इसपर एकमत होना, सार्वभौमिक होना अभी तक प्रतीक्षित है|

अमरकंटक निवासी श्री ए नागराज के २५ वर्ष के साधना एवं अनुसंधान से यह स्पष्ट हुआ है कि अस्तित्व (वास्तविकता) सह-अस्तित्व है, शून्य (स्पेस) में संपृक्त इकाइयों के रूप में है| ये इकाइयां ४ अवस्थाओं के रूप में प्रत्यक्ष हैं: जो पदार्थ, प्राण, जीव एवं मानव के रूप में है| इकाइयां स्वयं में व्यवस्था में हैं, एवं समग्र व्यवस्था में भागीदार हैं, अथवा सामंजस्य में हैं| मानव भी व्यवस्था में होना चाहता है, जो ज्ञान पूर्वक ही संभव हैं|

मानव चैतन्य इकाई (जीवन) एवं शरीर (जड़ वस्तु, भौतिक-रासायनिक वस्तु) के संयुक्त रूप में समझा गया है| मानव की मूलभूत चाहना सुखी होने की है, जो समाधान से ही संभव हैं, सही समझ, ज्ञान से ही संभव है| मानव की समस्त समस्याएं समाधान, ज्ञान के अभाव के कारण ही है| प्रस्तुत 'ज्ञान' निरपेक्ष है, प्रत्येक मनुष्य के लिए समान है, निश्चित है,

सार्वभौम है| इस आधार पर सार्वभौम मानवीय आचरण एवं सार्वभौम मानवीय मूल्य स्पष्ट होता है, जिससे अखण्ड मानव समाज - सार्वभौम व्यवस्था की सम्भावना उदय होती है| संक्षिप्त में कहें, तो इसमें मानव के सम्पूर्ण प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं, एवं प्रत्येक समस्या के लिए समाधान उपलब्ध हैं|

इस दर्शन को शिक्षा विधि में लाने का स्वरूप तैयार किया जा चुका है, एवं भारत में पिछले १५ वर्षों में लगभग ३०,००० लोग इस दर्शन के परिचय शिविरों से गुजर चुके हैं| कई मेधावी इसके गंभीर अध्ययन में लगे हैं| इसपर आधारित मूल्य-शिक्षा छत्तीसगढ़ राज्य स्कूल शिक्षा विभाग, उच्च-शिक्षण संस्थाओं एवं, विश्वविद्यालयों में लागू हो चुके हैं| आज तक श्री नागराज जी से कई प्रसिद्ध वैज्ञानिक, भारत के पूर्व राष्ट्रपति, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश, राज्य मुख्य-मंत्री, धर्म गुरु, प्रशासनिक अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षा विद एवं जन सामान्य लोग भी मिल चुके हैं, इस प्रस्ताव को सुने हैं, इनमे से कुछ इसके अध्ययन में लगे हैं|

मध्यस्थ दर्शन के इस प्रस्ताव में यह प्रतिपादित किया गया है कि **मानव जाति एक है, मानव धर्म एक है| मानव धर्म = सुख = समाधान = समझ** | अस्तित्व में व्यवस्था को समझना, चारों अवस्थाओं (पदार्थ, प्राण, जीव, मानव) में व्यवस्था को समझना ही मानव धर्म हैं| यही 'समाधान' हैं| यह अनुसंधान हम मानवों को अपने संकीर्ण, सामुदायिक मानसिकता से निकलने के लिए आशा की एक नयी किरण है, एक सरल मार्ग प्रशस्त कर देता है, जिससे वास्तव में अखण्ड मानव समाज, सार्वभौम व्यवस्था इस धरती पर स्थापित हो सके|
यह सभी धर्म के मानवों, एवं वे मानव जो अपने को किसी धर्म से जोड़कर नहीं भी देखते हो को इस प्रस्ताव को अपने ही सद्-विवेक से जांचने के लिए आमंत्रण है | यह सम्मलेन २३ अप्रैल, २०१२, को कानपुर में होगा |

<u>स्वेच्छा पूर्वक आने वालों का आमंत्रण हैं</u>

[***धर्म = धारणा** = 'जिसका जिससे विलागीकरण संभव नहीं हैं, वही उसका धर्म हैं |' पदार्थ अवस्था का धर्म = अस्तित्व, होना| प्राण अवस्था का धर्म = पुष्टी | जीव अवस्था का धर्म = जीने की आशा|
मानव धर्म = सुख = समाधान]

<u>कार्यक्रम:</u>

<u>दिनांक:</u> २३ अप्रैल, २०१२

<u>प्रात: ९ से १ बजे:</u> प्रस्ताव: मध्यस्थ दर्शन के रोशनी में "मानव धर्म एक, मानव जाती एक" का प्रतिपादन

<u>दोपहर १ से ३:००</u>: भोजन, अनौपचारिक चर्चा

<u>दोपहर ३:०० से ६:००</u> : "मानव धर्म एक" के लिए अन्य प्रस्तावों का आमंत्रण, विचार विमर्श

*** साधन, भोजन एवं ठहरने की व्यवस्था की जायेगी|***

कैसे पहुंचना हैं:

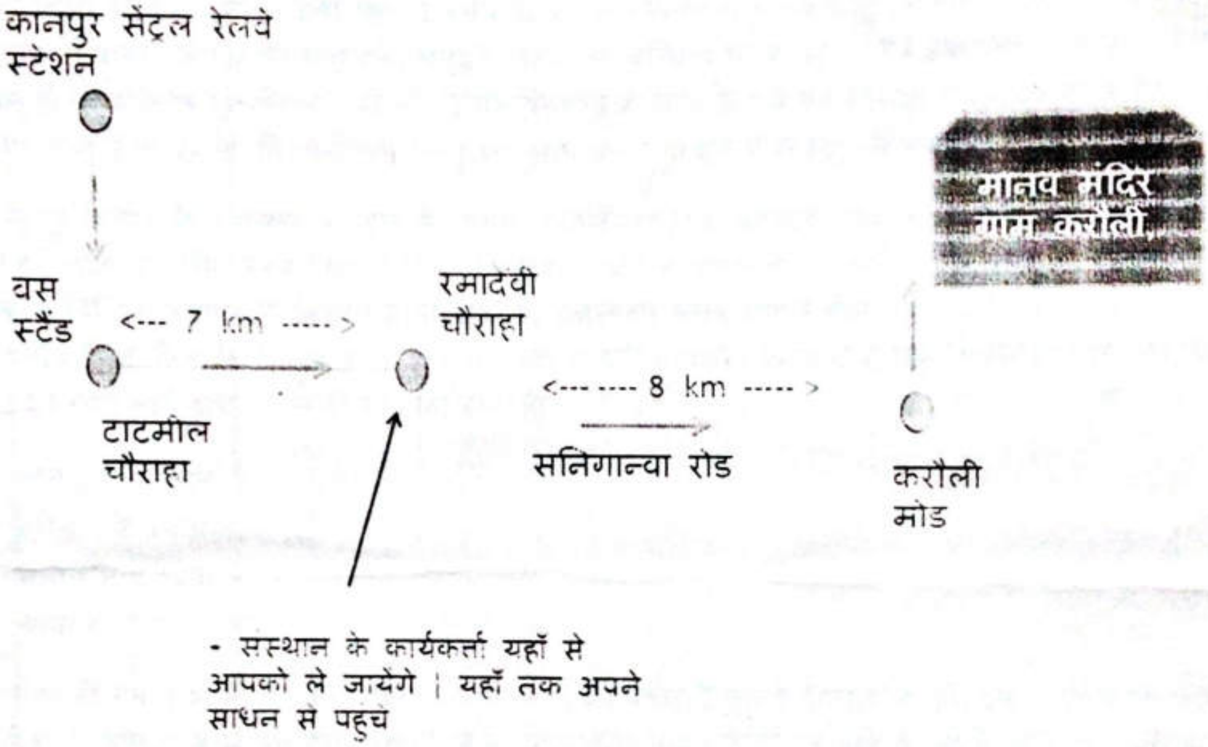

संपर्क -

कृपया अपने आगमन का पूर्व सूचने दें:

ईमेल करें: manavmandir@mail.com

फोन: <u>मुख्य नंबर:</u> प्रदीप: 9793919149, 9335373447 | गोपाल: 9451522231, 9335111631 | विवेक चतुर्वेदी:9839039997 | संतोष भदौरिया: 9695223379

श्री ए नागराज जी का लेख: **मानव जाती, मानव धर्म**

मानव धर्म के बारे में, तीन आशय समाहित हैं| विकसित चेतना में जीता हुआ मानव, देव मानव, दिव्य मानव का अध्ययन है | चेतना के सन्दर्भ में चार भाग में अध्ययन है: जीव चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना | जीव चेतना विधि से सम्पूर्ण अपराध मानव कर्ता हुआ देखने को मिला, उसका गवाही शिक्षा में लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद ही शिक्षा | हर अभिभावक अपने संतान को सुशील देखना चाहता है, हर देश काल में| उक्त प्रकार के तीनो उन्माद का शिक्षा देते हुए सुशील रहना कितना संभव है, हर अभिभावक सोच सकते है| विकसित चेतना के प्रमाण में यही आचरण में पाया जाता हैं की समाधान, समृद्धी, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण है | सहअस्तित्व में अनुभव का यह प्रमाण हैं| सहअस्तित्व (*'अस्तित्व', 'जो भी है'*) अध्ययनगम्य हो चुकी है| ऐसे सहअस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से सोचा गया विचारों का प्रमाण, नियम-नियंत्रण-संतुलन; न्याय-धर्म-सत्य रूप में व्यवहार में प्रमाणित होता हैं|

अनुभव मूलक विचार शैली सम्मत व्यवहार में स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में प्रमाणित होता हैं| इसे जीके, प्रमाणित करके देखा हैं| जिसका प्रयोजन अखंड समाज-सार्वभौम व्यवस्था है| इसके लिए ऊपर कहे गए आचरण विधि से वर्तमान में विश्वास होना होता है, फलस्वरुप अखंड समाज होता है| अखंड समाज व्यवस्था ही '१० सोपनीय विधि' से परिवार सभा मूलक व्यवस्था होता है| यही सार्वभौम व्यवस्था है| यही विकसित चेतना का फल परिणाम है जिसमे भागीदारी हर व्यक्ती का होना होता है|

- व्यक्ती में समाधान
- परिवार में समाधान, समृद्धी
- समाज में अखंडता
- व्यवस्था में सार्वभौमता

सहज प्रमाण ही भ्रम मुक्त, अपराध मुक्त मानव का स्वरुप है| इस प्रकार के मानव तैयार होना ही, इस प्रकार से नर नारी तैयार होना ही अपराध मुक्त, भ्रम मुक्त मानव जात का पहचान है| मानव जाती एक होने के मूल में काले, भूरे, गोरे और विभिन्न नस्ल समेत पाए जाने वाले मानव जात में खून के प्रजातियों का समानता के आधार पर, शरीर रचना में समाहित हड्डियों क्र आधार पर, अंग और अव्व्यों के आधार पर एक होना, इन सबका संयुक्त रूप में नाखून, दांत, के बनावट तीखे होना, खून के प्रजातियां निश्चित होना और आतों में मांसाहारी जात के जीवों का आंते छोटे होना, शाकाहारी जीवों के आंते लंबी होना, इन्ही आधारों पर मानव जाती एक होना अध्ययनगम्य हो चुकी है| मानव सुख धर्मी है, समाधान ही मानव धर्म है| समाधान समझदारी से होता है, समाधान से ही मानव सुख का अनुभव कर्ता है, यही मानव धर्म है| यह अध्ययनगम्य हो चुकी है| छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग इसे अध्ययन कर रहा है| इस प्रकार शरीर रचना के आधार पर मानव जाती एक है, एवं समाधान (समझदारी) के आधार पर मानव धर्म एक है (सुख)| इसी के आधार पर मानव जाती एक, धर्म एक होने का प्रतिपादन २३ अप्रैल २०१२ को होगी| मानव जाती एक, धर्म एक होने के आधार पर अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में 'मानव मंदिर' का स्थापन ग्राम करौली, कानपूर, उत्तर प्रदेश में हुआ है| जय हो, मंगल हो, कल्याण हो !

ए नागराज, प्रणेता, मध्यस्थ दर्शन - सह-अस्तित्ववाद , अमरकंटक, जि अनूपपुर, म.प्र. भारत